श्रीः
285 आर.पी.एस. फ्लैट्स
मदनगीर नई दिल्ली-62
18.4.79

भगवन्,

चरण कमलों में साष्टांग प्रणाम। बहुत समय से आपके दर्शनों की प्रतीक्षा थी किन्तु श्री रतन लाल जी से ज्ञात हुआ कि आप अभी इधर नहीं पधार रहे हैं, अतः बड़ी निराशा हुई। पिछले सप्ताह भी मैंने आपको पत्र लिखा था किन्तु डाक में नहीं डाला। अभी सोलन से श्री सुभाष जी का पत्र मिला।

आपके आशीर्वाद से श्री मन्दाक्रान्ता स्तोत्र का अंग्रेजी अनुवाद अब पूर्ण करने वाला हूँ किन्तु इसमें सन्तोष नहीं है, श्री रघुनाथ जी के करकमलों का स्पर्श पाकर इसमें प्राण आजायेंगे। श्री रघुनाथ जी आगामी मास में यह कार्य कर डालेंगे। यदि आपकी आज्ञा हो तो अभी संस्कृत और हिन्दी को प्रेस में दे आऊँ, जबतक हिन्दी और संस्कृत के तीन प्रूफ प्रेस में छपते हैं तबतक अंग्रेजी का कार्य पूरा हो जायेगा। बस अब आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।

इधर हमारी नानीजी का स्वर्गवास नवरात्रों में हो गया है।

मकान बनवाने का कार्य आपके आशीर्वाद से ही संभव हो पायेगा। मेरा तो विचार था कि इस अमृत भवन का गृह प्रवेश आपके करकमलों से भगवान परशुराम जयन्ती पर हो जाता किन्तु अब परसों शुक्रवार को तो नींव ही आरम्भ होगी। पंचांग में गृह प्रवेश का मुहूर्त मात्र पूरे वर्ष में एक ही दिन 6 जून

102

सर्वार्थसिद्धी के दिन गृह प्रवेश कर सकते हैं अथवा मात्र निर्जला एकादशी के दिन ही गृह प्रवेश करें। इस विषय में आपकी क्या आज्ञा है?

~~श्री~~ श्री रतनलाल जी का सहयोग

अभी मात्र चार दीवारी बनी है जिसमें तीन ट्रक ईंटे लग गई हैं जबकि सुनीता की माताजी के अनुमान डेढ़ ट्रक पर्याप्त था। बस आपकी कृपा का ही सहारा है। मैं आपके दर्शनों के लिए सोहाना आना चाहता हूँ कृपया सूचित करते रह कर कि आप कब तक वहाँ विराजेंगे।

भगवन्, अब हमारी हड़ताल भी समाप्त हो गई है, मई के प्रथम सप्ताह में ही आपकी सेवा में उपस्थित हो पाऊँगा? श्री रतनलाल जी ने भी पुत्र पत्र लिखा है।

श्री बाँकेलाल जी का हरनिया का आप्रेशन हो गया है। शेष आपकी कृपा से श्री सीताराम जी आदि सभी कुशलपूर्वक हैं।

आपके चरणरज में पुन साष्टांग प्रणाम

रवि शंकर त्रिवेदी

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



दूसरा मोड़ SECOND FOLD

To,

श्री सुभाष जी शर्मा

S.C. Sharma Engg. J.E.

दया भवन (रेलवे लाइन के नीचे)

Daya Bhawan (Below Rly. Line)

SOLAN (H.P.)

सोलन (हिमाचल प्रदेश)

पिन PIN 173212

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

From — R. Shastri,

JODHPUR

पिन PIN 342003

पहला मोड़ FIRST FOLD

के ब्लॉक को प्रकाशनार्थ भेजने हेतु लिखा था, वह ब्लॉक शायद जयपुर में या दिल्ली में श्रीरवि के पास हों, उसके अतिरिक्त यदि कोई अन्य चित्र हो तो उसका ब्लॉक यहाँ बनवाया जा सकता है, अतः इस सम्बन्ध में भी आप मुझे सूचित करावें कि कौनसा चित्र प्रकाशनार्थ देने की श्री श्रीजी की अनुमति है? यदि पहलेवाला चित्र ही देना हो तो जहाँ ब्लॉक हो, वहाँ यह सूचना भिजवादी जावे जिससे त्रिकोण और चित्र के ब्लॉक मुझे समय पर मिल जायँ। पुस्तक का मुद्रण इस मास के अन्त तक पूरा हो जाने की सम्भावना है।

आशा है, आप मेरा आशय अब समझ गये होंगे। उपर्युक्त बातों के सम्बन्ध में जैसी आज्ञा हो, अविलम्ब सूचित कराने का कष्ट करेंगे।

पुनश्च- सारांशतः – प्रकाशन के लिये श्री आचार्यचरण आशीर्वादस्वरूप कुछ पद्य या 'दो शब्द' जैसा कुछ यदि वे भेजने की कृपा करें तो वह प्रकाशनार्थ भिजवावें। चित्र और ब्लॉक के सम्बन्ध में जैसे निर्देश हों, उनसे अवगत कराइये।

यहाँ योग्य कार्य लिखें। श्री श्रीजी की सेवामें प्रणाम कहें। परिवार में यथायोग्य।

शेष क्षेम। शमिति।

आपका

(आनन्द शास्त्री)

श्री:

शिवोदय भवन (व्यासजी का नोहरा)
चौपासनी रोड़, सरदारपुरा
जोधपुर 342003
दि. 21.6.80

श्रीमान् शर्मा साहब,

सादर नमस्कार। शमुभयत्र।

आपका कृपा-पत्र कल मिला, प्रसन्नता हुई। आपने पूज्यपाद श्री श्रीजी की सेवा में मेरा निवेदन पहुँचा दिया, एतदर्थ धन्यवाद। मुझे पत्र लिखते समय यह पता नहीं था कि आपके यहाँ उनके विराजने का कितने दिन का विचार है? आपने उनसे प्राप्त कर जो निर्देश भेजे हैं, उनके लिये अनुगृहीत हूँ। पुस्तक का अब प्रकाशन 'श्री अमृत ग्रन्थमाला' में ही रहेगा, जैसा आदेश है। स्तोत्र में मूलरूप से 'मन्दाक्रान्ता' का ही उल्लेख रहने से स्तोत्र का नाम 'श्री मन्दाक्रान्तास्तोत्र' ही मुझे समझ में आया, श्री भगवतीस्तव को मैंने इस स्तोत्र का अपर नाम समझा, अत: इन दोनों को अलग रखते हुए 'मन्दाक्रान्तास्तोत्र' का आशय श्री भगवतीस्तव से है, यह भाव को बतलाने के लिये मान कर, उसे कोष्ठक में दिया, अब टाइटिल पेज पर इसका सुधार हो जायगा। यह आप मेरी ओर से निवेदन कर दें।

श्लोकों के अंक के साथ व्याख्या में भी अंक लगें, यह बात ठीक है। मैंने व्याख्या लिखते समय अंक नहीं लगाये, प्रेस कॉपी पुरानी ही दे दी और प्रथम दो श्लोकों की व्याख्या देख कर वैसा करने को कह दिया था, प्रेस दूर है, और यहाँ गर्मी अधिक असह्य पड़ रही है, पैदल थोड़ा सा भी चलता हूँ तो साँस उखड़ने लगती है, इस दृष्टि से प्रतिष्ठान के ही एक व्यक्ति को प्रूफ देखने का काम सौंपा हुआ है, दो फ़र्मे छप गये, तब इस भूल का पता लगा, अब आगे श्लोकों में क्रम सुधारा है और अन्तिम प्रूफ मैंने मँगाने और लिखित प्रिन्ट आर्डर के बिना न छापने को प्रेस को भी कहा है किंतु १८ श्लोक तक यह गड़बड़ हुई है। अब जैसे ही छपाई पूरी हो कर पुस्तक तैयार होगी, हाथ से नम्बर लगा दिये जावेंगे, अन्य कोई उपाय नहीं है।

मैंने पूर्व-पत्र में जो यह निवेदन किया था कि आप श्री आचार्यचरण से मेरा यह निवेदन करें कि इस प्रकाशन के लिये आशीर्वाद स्वरूप कुछ भेजें उसका आशय यही था कि इस प्रकाशन के लिये आशीर्वाद स्वरूप कोई पद्य या 'दो शब्द' जैसे आमुख के रूप में कुछ भेजें तो उसका पुस्तक के साथ प्रकाशन हो। उसका अर्थ किसी प्रकार की धन की व्यवस्था से नहीं था, वह तो उनके आशीर्वाद के फलस्वरूप पहले से हो ही गई है, अब धन की व्यवस्था तो श्री आत्मविलास के द्वितीय संस्करण और श्रीराघ्नालोक के सञ्जीवन भाष्य हेतु होनी चाहिये। अत: मेरा तो यही निवेदन है कि अब श्री आचार्य-चरण उनके भक्तों को ऐसा सम्बल प्रदान करें और ऐसा अनुग्रह करें जिससे उक्त साहित्य का प्रकाशन यथाशीघ्र हो सके।

श्री मन्दाक्रान्तास्तोत्र के प्रकाशन में श्री श्रीजी का जो चित्र छपा है, वह शायद अच्छे कागज पर न होने से बहुत अच्छा प्रतीत नहीं होता, मैंने श्री मिश्रजी को भरतपुर उक्त चित्र

श्रीः

नई दिल्ली
10-7.78

अनन्त श्रीविभूषित पूज्य गुरुमहाराजजी,

चरणकमलो में साष्टांग प्रणाम स्वीकार।

आपके जन्म दिवस पर बहुत बहुत बधाई। भगवान शंकर से प्रार्थना है कि आप चिरकाल तक स्वस्थ रहकर हम भक्तों पर कृपा करते रहें। आपका सोहना से कृपा पत्र प्राप्त हुआ था, अतः आज्ञानुसार एक सौ एक प्रतियाँ श्री सेवामें भेज रहा हूँ। अभी मात्र ग्यारह प्रतियां पूज्य श्री गोविन्दजी को भरतपुर भेज रहा हूँ। आप गुरु पूर्णिमा पर देहली में ही विराजेंगे, यह जानकर यहाँ सब भक्तो को हार्दिक प्रसन्नता हुई। योग्य सेवा कृपा कृतार्थ करें

कृपाकांक्षी
रवि शर्मा त्रिवेदी

मुझे प्राप्त हो जाये तो आकर दर्शन करलूंगा, शिवरात्रि के बाद एक दिन के लिये अनंतवरम् जाऊंगा, वहां पर चालीसा का स्थापना है गोपाल कृष्ण शास्त्रि जी से मिलूंगा। दो दिन तेनालि के पास चालीसा का अखण्ड पाठ और स्थापना है। काशी जी में श्री रामनवमी के समय रामतारक आन्ध्राश्रम में (मानसरोवर) सप्ताह आनन्द के स्वामीजी के संकल्प से होगा। बाद में वहां का पता देदूंगा। श्री आत्मविलास के संस्कृत व्याख्यान प्रारंभ हो गया होगा। आपके सेवा में आने वाले प्रेमी सज्जनों को मेरा नारायणस्मरण, पुन: आपके श्रीचरणों में मेरा ओं नमो नारायण।

अवधूतेन्द्र सरस्वति

% साधक ग्रन्थ मंडलि
तेनालि - पो
(जिला) गुंटूर
(आन्ध्र प्रदेश)

यदि समय, श्री शंकर भगवान् की कृपा होतो दिल्ली में आपके दर्शन करके २६·२-६८ को वाराणसी जाऊंगा। अवधूतेन्द्र - - - -

ओं हरि:

हैदराबाद - १३-२-६६

श्री राजकुमार अग्रवाल जी को सप्रेम नारायण स्मरण श्री बद्रीशजी श्रीरामरतन जी और श्री महाराजजीके सेवामें जो सज्जन और परम भाग्यवान् हैं उन सबको मेरा नारायण स्मरण,

स्वामी अवधूतानन्दस्वामि

C/o Sadhanagrantha Mandali

Tenali

Guntur - Dt

(Andhra)

ओं हरिः   हैदराबाद - १३.२.६२

श्री श्री मदमृत वाग्भवाचार्य जी के अवधूतेन्द्रसरस्वति का ओं नमो नारायण परम दयासे लिखा हुआ आपका पत्र आज मुझे यहाँ मिला, कटक से सीधा ८ तारी को यहाँ रानी ललितारेवी के यहाँ श्रीराम जयराम जय जयराम लिखा के लिये यहाँ आया था। स्वामी चिदानंदसरस्वति ऋषीकेश से आये हैं। आपकी भेजी हुई पुस्तकें १ सौ बालकृष्ण के पास आये हुए हैं। मैं उन पुस्तकों को लेजाकर श्रीकाम कोटि स्वामीजी को दे दूँगा। वे अभी तक विजयवाड़े के पास हैं। तीन महिने के बाद शायद यहाँ आसकेंगे।

तेनालि बि. सूर्यप्रकाश शास्त्रीजी के पतेसे पुस्तक आन्ध्र के पंडितों को देने के लिये आपको पता दिया था, पुस्तकें वहाँ पहुँचते ही वैसा ही किया जायगा। अभी यहाँ से मद्रास के पास आन्ध्र के बोर्डर श्रीकालहस्ति जाऊँगा करीब १५ मार्च तक उधर रहूँगा, वहाँ से २४ मार्च को वाराणसी जाऊँगा एप्रियल अर्थात् चैत्र शुदि द्वादशी तक वहाँ रहूँगा। तब तक आप यदि दिल्ली में ही रहेंगे तो अवश्य आपके दर्शन करूं। दिल्ली में आपके दर्शनार्थ और सत्संग के लिये, सेवा में जो हैं वे सब परम धन्य हैं बहुभागी हैं। चैत्र में आप कहीं भी रहेंगे आपका पत्र



सांस्कृतिक गवेषणा प्रधान त्रैमासिक पत्रिका

संपादक
डा० रामदत्त भारद्वाज
एम. ए. (त्रय), एल.एल. बी., पी.एच.डी., डी.लिट्.
डा० मोहनलाल श्रीवास्तव
डा० एम ए., पी.एच.डी.' साहित्यरत्न साहित्यालंकार,
दूरभाष : ५६५७०७

कार्यालय
५१/१, न्यू मार्केट, न्यू रोहतक रोड, नई दिल्ली-५

Regd

२५-४-७५

पूज्य आचार्य अमृतवाग्भवजी,

साद्र प्रणाम।

मैं स्वयं आपसे मिलना चाहता था परन्तु अस्वस्थता और कार्य की अधिकता के कारण कठिन दिखाई दे रहा है तो भी प्रयास करूँगा। मैं कई बार आपसे श्री राजपाल जी के सम्बन्ध में बातें कर चुका हूँ। आपको डा० चन्द्रभानु पाण्डेय से सविस्तार सूचना मिल जायेगी क्योंकि वे कार्यसमिति की बैठक में उपस्थित थे। श्री राजपाल जी इस समय जो कुछ मेरे लिए, मेरे परिवार वालों के लिए और संस्था के लिए शब्दों का उच्चारण कर रहे हैं, जो कुछ कर रहे हैं उसका ही परिणाम मैं अब देखना चाहता हूँ। मैं अब दृढ़ता पूर्वक निश्चय कर चुका हूँ कि श्री राजपाल जी मुझे — नेस्त नाबूत करें, मेरा मिंदरि करें, संस्था को तोड़ें और मुझे दिल्ली से भगावें, ये सारी बातें अब मैं शांति पूर्वक देखना चाहता हूँ। ऐसा वो क्यों कर रहे हैं, इसमें उनका क्या स्वार्थ है, वे ही बता सकते हैं। स्वामी रामचन्द्र के यहाँ मेरी उनसे भेंट हुई थी — वहाँ भी उन्होंने अपना वास्तविक रूप दिखाया है। मेरा केवल यही कहना है —

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है —
देखना है कितना ज़ोर अब बाज़ुए क़ातिल में है

वे कहते हैं कि मैंने आपको लूटा और ठगा है। आपने जो एक सौ 50 रुपए संस्था को दिए हैं — आपके आदेश पर मैं समिति

शेष [illegible] आपको अविलम्ब लौटा रहे हैं।
भवदीय
मोहनलाल श्रीवास्तव

Sringeri
13-7-82

परम शिव

परम पूज्य श्री अमृत वाग्भवाचार्य जी महाराज का प्रिय पादारविन्दों मे अनेक साष्टान्ग प्रणाम पूर्वक गोपाल कृष्ण शास्त्री आस्थान विद्वान जगद्गुरु शंकरचार्य श्रृंगेरि मठ का विज्ञापन कर रहें है। आठ महीनों के पहले आन्ध्र (हैदराबाद) मे नाडी दौर्बल्य से (Nervous Weakness) वाम भाग मे मणिबन्ध से आरम्भ होकर क्रमेण वाम पाद, वाम हस्त को दौर्बल्य आगये। प्रप्रथम तीन् महीनो स्नान, भुज, पाठ नही। बैठना, उठना मुश्किल होगया॥ विजयवाडु मे Phyjo Therapy वैद्य चिकित्सा करने से अर्ध आरोग्य हो गये। वहाँ से श्रृंगेरि आकर तीन महीना हो गया॥ श्री जगद्गुरु शंकराचार्य महाराज यात्रा के ...

भारत होकर Bombay, Dwaraka Haridwar, Gangothri, Yamunothri, ~~Lakh Ghar~~, देखकर Delhi में आषाढ पूर्णिमा से 'वसन्तविहार' मे चातुर्मास्य शिष्य स्वामी के साथ कर रहे हैं॥

आप का दिव्यानुग्रह, दिव्योपदेशों का प्रभाव से, अभि 75% (तीन हिस्सा) आरोग्य हो गया। मेरे धर्मपत्नी साथ रहकर, सेवा कर रही है। मेरे माताजी आन्ध्र प्रदेश मे गाँव मे है। एक भाई कानपुर मे दूसरा भाई, औरंगबाद मे अपना नौकरी कर रहे हैं। आपका कृपा से बाकी सब ठीक है। इस लिये इस वर्ष होली मे वृन्दावन आकर आपका दर्शन कर न सके। लेकिन आपका चित्र ~~का~~ दर्शन

आप का स्वास्थ्य कैसा रहा? आप का अनुमति लेकर
Delhi आने की प्रयाण का तय्यारि इस लिये
कृपा करके आप का Programme श्रृंगेरि शंकराचार्यजी को लिखिये

स्मरण। प्रभाव से धैर्य से रहते
हैं। गणेश चतुर्थी को "वसन्त
विहार" मे श्री श्रृंगेरि जगद्गुरु
शंकराचार्य जी के पास
विद्वत्सभा आरम्भ होकर भाद्रपद
पूर्णिमा तक चलेगी। भारत
भरके प्रौढ पण्डित लोग आवेंगे
ये सब आपको ~~कि~~ पास हैं होने
के कारण मालुम होगी। गणेश
सभा में मुझ को आने को
आह्वान है॥ इस अवसर पर Delhi
आकर आपका भी दिव्य दर्शन
उपदेशों का परम ~~लाभ~~ पाकर
कृतार्थ होने को विचार है॥
श्री सीतारामजी को उनक
लड़की, जामाता, वगैरा परिवार को
मेरा कुशल प्रश्न है॥ उनक श्रद्धा-
पूर्वक आतिथ्य को, मैं हमेशा ~~मणि~~ हैं
आपका कृपाकांक्षी -गोपालकृष्ण उपरस्था
[illegible]

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD

भारत INDIA 25

10 भारत INDIA

To

Maharaj
Sri Amritha Vagbhava charya ji
C/o Seeta Rama Talwar
B-66
South Moti Bagh
(Nanakpura)
DELHI

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

G. Gopalkrishna Sastry
Asthanavidwan of Saradapeetham
SRINGERI
577-139
Karnataka State

पिन PIN

२७।८।६२॥

॥ श्रीः ॥

श्रीमन्तोऽत्रभवन्तः श्रीमहामहिमशालिनः।
सर्वतन्त्रस्वतन्त्राः सद्गुणिनोऽमृतवाग्मिकाः॥१॥
आचार्यशिष्या गुरवो विज्ञाः स्वीकुर्वन्तु मे।
प्रणामान् सम्प्रणोदितः कवि-श्रीहरिशास्त्रिणः॥२॥
श्रीमतां तत्रभवतां सतां तत्त्वविदां विभो!
कृपया लिखितां व्याप्ताः सहर्षं काव्यमद्भुतम्॥३॥
पूर्णप्रायं मुद्रितं च, तदादौ लेख्यमस्तु किम्।
मया प्राक्कथनं नाम लिखितं सत्सुशिक्षितम्॥४॥
संस्कृतेऽपि च भाषायां तदादौ देयमास्ति वै।
अतः परं श्रीमतां च लेखो वा संमतं तथा॥५॥
शुभाशीर्वादि लेखा वा किमप्यास्तां च तावकम्।
अनेकेषां तु विदुषां संमतानां प्रयाचने॥६॥
पुस्तके पृष्ठसंख्यावि. कालो बहु लगिष्यते।
तत्कृत्वा नाहं शक्नोमि मितिमिति चेतसा मतौ॥७॥
अत्रेऽत्रभवतां नाम कीदृशमाज्ञास्ति तत्कृते।
यथा वो यदि वदिष्यन्ति तद्विधेयं तथा मया॥८॥
आगमः श्रीमतामत्र शीघ्रमेव भवेद्यदि।
तदा तु सर्वेऽस्मी कामाः पूर्णतां प्राप्नुयुर्ध्रुवम्॥९॥
व्ययश्च कार्गलादीनां लग्नः समाधिकोऽधुना।

पुस्तकस्यास्य सौन्दर्ये तथैव मुखपृष्ठके॥१०॥
महर्घतानु कागदानां वर्धते अधिको व्ययः।
इत्यादि सर्वं श्रीमत्या भगवत्या महेश्वरः॥११॥
कृपया सर्वमेवाशु सुसम्पन्नं भविष्यति।
कृतज्ञता प्रकाशो हि मया का लिखितो लघुः॥१२॥
संमुद्राप्यो नवो विद्वान्निति निश्चितं कृतम्॥

पत्रमेकं मया दत्तं श्रीमद्गोविन्दशर्मणे॥१३॥
आशासे तेन विदुषा श्रीमद्भ्यो लिखितं भवेत्।
किं विधेयं मया तत्र शीघ्रमादेश्यतां विभो!॥१४॥
अस्माकं भवतो नित्यं हृदये स्वमभीप्सितम्।
कृपादृष्टिमपि सदा कर्षणीया त्वया विभो!॥१५॥
विधेयोऽहं तु भवतां शोभनः परः सदैव वै।
कृपापत्रं मम कृते दीयतां द्रुतमेव भो॥१६॥
दृष्ट्वा तत्कृते त्वाहं सोऽभाविष्यामि सहर्षताम्।

श्रीमतां दर्शनाभिलाषी
२७।८।६२ श्रीहरिशास्त्री दाधीचः
जयपुरस्थः

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

BY AIR MAIL
PAR AVION
हवाई डाक से



Redirected

श्रीमान् पूजनीय आचार्य श्री
अमृत वाग्भव महोदय की सेवामें.
C/o ~~पं० बलजिन्नाथजी शास्त्री एम.ए.ओ.एल.~~
~~कुलगाम (कश्मीर)~~
c/o V.D. Bhakshi,
~~Kulgam~~ office Supdt.
Hindustan Housing Factory
BHOGAL, JUNGPURA NEW DELHI

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

श्री: १००८ ~~पूज्य~~ पूज्यपादाचार्य भगवान

सादर प्रणाम।

प्रिय बन्धु जी।

हम लोग १५ ता. को पठानकोट पहुंच गये थे और

दिल्ली से २२० रुपये का सामान बंद करके कांगड़े में

श्री जगदम्बा जी के दर्शनार्थ चले गये तथा उसी

वापस पठानकोट पहुंच गये थे वहाँ से लारी द्वारा रात्रि

को डलहौजी रवाना हो गये थे तथा पिता जी तथा गीता की माता बड़ी

[illegible] को [illegible] पहुंच को १०।। बजे लड़के को देखा

[illegible] हो गये और [illegible] को देहली से १०४ का. [illegible]

गये आप के आशीर्वाद से यात्रा निर्विघ्न तथा कुशलपूर्वक

सम्पूर्ण हुई है [illegible] है इधर का [illegible]

कुशल है माता जी की गाड़ी कल पास हो गई है

इसके बाद [illegible] करती है।

नवरात्रों में [illegible] (वरवरण) का कार्य ~~करने~~ की आज्ञा

आप की आने पर [illegible] तथा सम्बन्धियों का

[illegible] आप [illegible] को

[illegible] नवरात्रों में ठीक रहेगा [illegible]

[illegible] हो आप की आशानुसार ही मुझे चलना है

आशा है [illegible] में श्री [illegible] जी का [illegible]

पत्र आप का [illegible]

[illegible]

मालूम तो नहीं भेजा था कि
पाकिस्तान से आकर पत्र लिखूंगा
अतः उन के पत्र आने पर ही लिखूंगा
औषधालय का काम पुनः कुछ दिन
अधिक करना पड़ेगा। क्योंकि रोगी बहुत
प्रशंसा करके आज प्रातः पहली बैठक में 200
रोगियों का परीक्षण किया। इसलिये
और जानकारी के अधिक नहीं लिख
सकता हूं। फिर दूसरे पत्र में सब हाल
दूसरे लोगों का लिखूंगा।

आप सब आप को कैसा लगा
सूचित करने की कृपा अवश्य करें।

सद्गुरु करेंगे आप को इस दुनिया में हर
सम्पन्न हो इस में ही इस दोनों वंशों (पक्षों)
का कल्याण है। आप को इस स्थानान्तर से
नौकरी में पद प्राप्त सफलता है।
पदोन्नति देने की कृपा अवश्य करें।

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

POSTAGE 10 NP INDIA — NEW DELHI

सेवा में
श्री:
c/o
Shri K. K. Anand شری کے کے آنند
House of Pt Banke Bihari ji مکان پنڈت بانکے بہاری جی
Gogji-Bag گوگجی باغ
Shirinagar Kashmir سرینگر - کشمیر

पहला मोड़ First fold
दूसरा मोड़ Second fold
तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :— Sender's name and address :—

"Vaid" Rajguru
Bhagat Road
Jangpura. Delhi 14

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

श्रीः

285 RPS Flat Madangir
New Delhi 62
31. 5. 79

आदरणीय बन्धुवर श्री सुभाषजी,

सादर प्रणाम।

आज प्रातः "श्रीमो शंभो" का जप कर रहा था कि रतनलालजी के लड़के ने आपका पोस्टकार्ड लाकर दिया, अनन्तश्रीविभूषित पूज्य महाराज जी सोलन आपके यहाँ पधार गये, यह जानकर हर्ष हुआ। मैं कई दिनों से आपको पत्र लिखने की सोच रहा था। इधर दिनांक 20.5.79 को धोखे आई भारतेन्दु ने तीव्र निद्रा देने वाली पचास गोलियाँ एक साथ खाली थी, किन्तु श्रीमहाराजजी की कृपा से पिताजी श्री महामृत्युंजय का हस्पताल में जप करते रहे, और मृत्युमुख से निकाल लाये।

श्रीमन्दाक्रान्ता स्तोत्र लगभग पन्द्रह दिन पूर्व प्रेस में जा चुका है और पिताजी हिन्दी संस्कृत के प्रूफ देख रहे हैं। इधर अंग्रेजी अनुवाद का संशोधन कल से श्री रघुनाथजी करेंगे। आज भी मैं उनके घर गया था किन्तु वे यूनिवर्सिटी चले गये थे, वैसे श्री सन्तरामजी ने इसे काफी सुधारा है। आशा है शीघ्र ही इसे भी प्रेस में दे देंगे।

पिछले रविवार को "अमृत वचन" को छपने का लेटर डाला गया था सो पहुँचें

सीमेन्ट का प्लास्टर कर दिया
जायेगा। यह सब महाराज जी की
कृपा का परिणाम है, उन्ही
के आशीर्वाद से 6 जून को
प्रातः काल गृह प्रवेश का मुहूर्त
कर देंगे। महाराज जी की कृपा को
मैं शब्दों में कैसे वर्णन करूँ,
उनके श्री चरणों में मेरा तथा
परिवार के सभी लोगों का 'साष्टांग'
दण्डवत् प्रणाम निवेदन करें।
श्री मुन्द्राकान्त लाल की प्रगति
के विषय में अगले सप्ताह में
निवेदन करूँगा। इधर अभी मौसम
ठंडा ही है। कृपा पत्र देवें
कृपाकांक्षी
रवि शंकर त्रिवेदी

पहला मोड़ FIRST FOLD

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD





31/5/79
रवि शंकर त्रि

सेवा में
श्री सुमति चन्द्र जी शर्मा
दया भवन
रेलवे लाइन के नीचे
P.O. Below Railway Line
SOLAN. सोलन
H.P. हिमाचल प्रदेश

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

पिन PIN

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

भरतपुर,
दिनाङ्क ८-५-६८,
बुद्धवार।

ामें

श्रद्धेय, परमादरणीय एवं पूजनीय,
ःस्मरणीय तथा भगवन् श्रीजीमहाराजजी
ाज करबद्ध चरणारविन्दों में साष्टांग
वत प्रणाम मालूम हो।

में यहाँ आपकी कृपा-दृष्टि
सकुशल हूँ। मैं आपके भगवत्
के दर्शन करने के लिये बहुत ही
क हो रहा हूँ। मैं परीक्षा
(अंग्रेजी केवल) देने हेतु दिनाङ्क
-६८ को पलवल पहुँचा क्योंकि
गवन्जी परीक्षा दिनाङ्क २९-४-६८
ारम्भ होनी थी। पलवल आने
मैं श्री पं०जी महाराज से मिला
ने भूल से आपका पता नहीं
ाया। अतः मैं आपके दर्शन
ं कर सका। मैं दिल्ली ...

आपके दर्शन लाभ प्राप्त करता तथा
कृतार्थ होजाता। आपकी पावन-कृपा
से मैं इहलोक ओर परलोक अवश्य
सुधार लूँगा। ऐसा मेरा दृढ़ एवं
सत्य विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, प्रेम आदि
आदि हैं। यह सब आपकी ही दया-दृष्टि
है।

प्रश्नपत्र दिनाङ्क १-५-६८ को
समाप्त हो गये। कुल तीन ही पेपर
देने थे और मैं अन्तिम प्रश्नपत्र
देकर भरतपुर शाम की बस वापिस
आगया।

भगवन्! प्रश्नपत्र पूर्णतः सन्तोष-
जनक नहीं हुई हैं। मुझे आपकी केवल
कृपा एवं दया-दृष्टि ही बचा सकती
है। महाराजजी! मैं उक्त परीक्षा इससे
पूर्व दो बार ओर दे चुका हूँ परन्तु
श्रीसम्पन्नता नहीं प्राप्त हुई। अबकी बार
आप कृपा करें, दया करें, क्षमा करें, स्नेह
करें ... ताकि मेरी रक्षा हो

दिनाङ्क ८-५-६८,
बुद्धवार।

सेवामें

श्रद्धेय, परमादरणीय एवं पूजनीय, प्रातःस्मरणीय तथा भगवन् श्रीजीमहाराजजी महाराज करबद्ध चरणारविन्दों में साष्टांग दण्डवत प्रणाम मालूम हो।

मैं यहाँ आपकी कृपा-दृष्टि से सकुशल हूँ। मैं आपके भगवत् रूप के दर्शन करने के लिये बहुत ही उत्सुक हो रहा हूँ। मैं ~~अब~~ परीक्षा बी.ए. (अंग्रेजी केवल) देने हेतु दिनाङ्क २८-४-६८ को पलवल पहुँचा क्योंकि श्री भगवनजी परीक्षा दिनाङ्क २९-४-६८ से प्रारम्भ होनी थी। पलवल आने से पूर्व में श्री पं० जी महाराज से मिला उन्होंने भूलसे आपका पता नहीं बतलाया। अतः मैं आपके दर्शन नहीं कर सका। मैं दिल्ली आकर आपके दर्शन लाभ प्राप्त करता तथा कृतार्थ होजाता। आपकी पावन-कृपा से मैं इहलोक और परलोक अवश्य सुधार लूँगा। ऐसा मेरा दृढ़ एवं सत्य विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, प्रेम आदि आदि हैं। यह सब आपकी ही दया-दृष्टि है।

प्रश्नपत्र दिनाङ्क १-५-६८को समाप्त हो गये। कुल तीन ही पेपर देने थे और मैं अन्तिम प्रश्नपत्र देकर भरतपुर शाम की बस वापिस आगया।

भगवन्! प्रश्नपत्र पूर्णतः सन्तोष-जनक नहीं हुऐ हैं। मुझे आपकी केवल कृपा एवं दया-दृष्टि ही बचा सकती है। महाराजजी! मैं उक्त परीक्षा इससे पूर्व दोबार ~~३~~ और दे चुका हूँ परन्तु श्रीसम्पन्नता नहीं प्राप्त हुई। अबकी बार आप कृपा करें, दया करें, क्षमा करें, स्नेह कर भगवन्जी ताकि मेरी रक्षा हो

सके। समय और धन का काफी दुरुपयोग हो चुका है। इस बार मैंने जीजान से महनत की है, परन्तु प्रश्नपत्र बिल्कुल सन्तोषजनक नहीं हुये है।

आप ही रक्षा कर सकते हैं, आपके लिये पुकार है। आप कल्याण करें। रक्षा करें। मैं आपके दर्शन करना चाहता हूँ आप मुझे आज्ञा देवें। श्री---- श्री---।

श्री पं० जी महाराज को यथोचित जयशंकर ज्ञात हो।

दि०:- ८-५-६८ मैं हूँ,

आपका पुत्र –

[signature]

पहला मोड़ First fold

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



सेवामें–

श्री श्रीजी महाराजजी c/o पं०
नित्यानन्ददत्तजी,
J-491 श्रीनिवासपुरी
नई दिल्ली (New Delhi)

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :– Sender's name and address :–

[signature]
(छोटेलाल)

8/5/68



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

दूसरा मोड़ Second fold

एक पत्र पहले भी लिखा था मास्टर जी बाल बच्चों के बीच में हो। हम लोग यहाँ से आपके आज्ञानुसार 13 अगस्त शिवरात्रि के उपरान्त चल [illegible]

यहाँ 10 दिन निरन्तर वर्षा के बाद आज आकाश निर्मल हुआ है 10 दिनों में केवल 10 घंटे सूर्य नारायण निकले होंगे (देहली में इतनी लम्बी वर्षा इस शताब्दी में नहीं हुई। कश्मीर में वर्षा का क्या हाल है यात्रा में बाधक तो नहीं होगी? हमें क्या क्या जरूरी सामान साथ लाना चाहिये। मेरी इच्छा है कि कश्मीरी दोहरी दुपट्टी लोई वहाँ आकर ही खरीदें तो क्या अनन्तनाग या पहलगाम में ऐसी दुकानें हैं कि हम जाते हुए खरीद कर लें या हम यहाँ से पूरा प्रबन्ध कर के चलें। आप के दर्शन कहाँ होंगे? आप अनन्तनाग जाने की लिये साथ चलने की कृपा करें [illegible] कृपया विस्तारपूर्वक लिखें - आप का कृपा पत्र आने पर ही हम अपना सामान बाँधेंगे "

यहां से हम खाने का राशन आटा घी नौकर वगैरह साथ लाना चाहिये या नहीं यह लिख आप के पत्र आने पर ही निश्चय करेंगे॥

श्री १०८ श्री कृष्ण स्वामी जी !

सादर प्रणाम

एक पत्र पहले भी लिखा था मास्टर जी श्रीलाल लालमन के पत्र में हो। हम लोग यहां से आप की आज्ञानुसार १ अगस्त श्रीनगर के उपरान्त ... गये यहां १० दिन निरन्तर वर्षा के बाद आज आकाश निर्मल हुआ है १० दिनों में केवल १० घंटे सूर्य नारायण निकले होंगे देहली में इतनी लम्बी वर्षा इस शताब्दी में नहीं हुई। कश्मीर में वर्षा का क्या हाल है यात्रा में बाधक तो नहीं होगी? हमें क्या क्या जरूरी सामान साथ लेना चाहिये। मेरी इच्छा है कि कश्मीरी दोहरी पट्टी लेलूं वहां आप ही खरीद दें तो क्या अनन्त नाग या पहलगांव में ऐसी दुकान हैं कि हम जाते हुए खरीद करलें या हम यहां से पूरा प्रबन्ध कर के चलें। आप के दर्शन कहां होंगे? आप अमरनाथ जाने के लिये साथ चलने की कृपा करें कृपया लौटती डाक से लिखें - आप का कृपापत्र आने पर ही हम अपना कार्यक्रम बांधेंगे ॥

यहां से हम स्वयं का राशन आटा भी नौकरी वगैरा साथ लेना चाहिये पत्र ही पर लिख आप के पत्र आने पर ही निश्चय ॥

हमारा [illegible] के [illegible]
[illegible] अनन्त नाग [illegible]
[illegible] के आगे के लिये [illegible]
का [illegible]
श्री [illegible]
[illegible] के पश्चात
[illegible] हो गये
अत: आशा है कि आप अवश्य कृपा करे
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
वैद्य त्रिगुणा
19-7-60.

पहला मोड़ First fold

यहां काट कर खोलिये To open cut here

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



सेवा में
श्री [illegible]

श्रीमान् प्रोफेसर [illegible] पंडित
अनन्त नाग कालेज अनन्तनाग
काश्मीर
Anant Nag College
Anant Nag - Kashmir

दूसरा मोड़ Second fold

तीसरा मोड़ Third fold

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

प्रेषक. वैद्य - त्रिगुणा
[illegible] रोड जंगपुरा
दिल्ली. 14.

19/7/60





इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

॥श्रीः॥

भरतपुर,
दिनाङ्क 4-3-1982
गुरुवार

सेवामें

परमादरणीय एवं पूज्यनीय महामहिम श्री महाराज जी !

परम पावन श्रीचरणारविन्दों में करबद्ध ढोक तथा कोटिशः जयशंकर जयशंकर की ज्ञात हो।

कुशलक्षेम के उपरान्त प्रार्थना है कि मैंने दिनाङ्क 27-1-1982 को सेवामें पत्र प्रेषित किया था जो कि आपको उपलब्ध होगया होगा। अब आगे प्रार्थना है कि मैं राजकीय विभिन्न व्यवधानों के कारण दो बार आपके दर्शन करने की तिथि निश्चित करने की सूचना प्रेषित करने पर भी दिल्ली नहीं आ सका। इसके लिये बारम्बार प्रार्थना है कि मुझे क्षमा करने की कृपा करेंगे तथा दया करेंगे।

अबकी बार पुनः मैं आपके पत्र की प्रतीक्षा बड़ी उत्सुकता से कर रहा हूं। प्राप्त होनेवाले पत्र में आपके निर्देशानुसार श्रीचरणकमलों में आकर दर्शन करूँगा। आप कृपा कर पत्र-प्रेषण कराने की कृपा करेंगे।

श्रीजगदम्बा भगवती से एक मात्र यही प्रार्थना करता रहता हूँ कि आपकी अनुकम्पा सदैव बनी रहे — दया-दृष्टि से सदा ही निहारते रहें — आपका दिव्य प्रकाश सदा सदैव उपलब्ध होता रहे एवं आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक रहे।

आपको पुनः बारम्बार नमस्कार-नमस्कार है।

मैं कल दिनाङ्क 3-3-82 को पंडितजी के यहाँ गया। उनका स्वास्थ्य ऐसा ही चल रहा है। आदरणीय पंडितजी को यथायोग्य जयशंकर ज्ञापित हो।

पिताजी का यथोचित जयशंकर की मालूम हो। गृहिणी एवं बच्चों का श्रीचरणों में ढोक ज्ञात हो।

शेष आपकी दया-दृष्टि।

सेवार्पित।

आपका वत्स--

छोटे [signature] 4/3/82

(छोटेलाल)

आदरणीय बाबूजी को जयशंकर की ज्ञात हो। आदरणीय श्री रविशंकरजी त्रिवेदीजी, श्री रतनलालजी सभी सुहृदयों एवं सज्जनों को नमस्कार -- जयशंकर की ज्ञात हो।

छोटे [signature] 4/3/82

पहला मोड़ FIRST FOLD



अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



4/3/82

सेवामें

श्री श्रीजी महाराजजी C/o श्रीसीतारामजी,
B 66 साउथ मोतीबाग,
साउथ नं० 2, नई दिल्ली
(NEW DELHI)

पिन PIN

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED
पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS
प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

छोटेलाल,
श्री सन्तोष सदन,
मथुरा गेट, भरतपुर (राज०)

पिन PIN 321001



अस्पृश्यता ईश्वर और मानवता के प्रति अपराध है।
UNTOUCHABILITY IS A CRIME AGAINST GOD AND MAN

श्रीरमानन्दजी से मिला था उनका अभिप्राय
यही था कि पहले पद्य फिर उनके पद्य
फिर संस्कृत टीका फिर भाषा टीका यह
सब पृथक् २ रूप में छपें अर्थात्
पहले आठों मूल पद्य फिर दूसरे
पूरे फिर संस्कृत टीका पूरी फिर भाषा
टीका पूरी श्री दुर्गाजी साथ थे उन्होंने
इसे पसन्द नहीं आप जैसी स्वीकृति
दें लिख दूं अथवा आपने लिख
दिया हो तो ठीक है रही प्रूफ की
बात सो उनको लिख देता हूं
वे भेज देंगे अभी मुद्रणारम्भ
नहीं हुआ है श्री रमानन्द जी भी
इस समय कुछ शरीर से मैंदे हैं
संभवत: अब ठीक होगये होंगे

गर्मी का कारण है अन्यथा एक स
जैपुर रहना इस कार्य के लिये प
दूसरे वृन्दावन वाले श्री ब्रह्मचारी
श्री पुरुषोत्तम मास के लिये ही
अभी तक नरेश देहली से लौट क
आये हैं सुना है गत कल गोवर्द्धन
वहां प्रदक्षिणा कर रहे हैं एक
में यहां आजायेंगे आने पर उ
मिलूंगा विवाह संभवत: द्वि
अथवा आषाढ़ कृष्ण में र
शेष कब लिखूंगा। आने को अ
तभी आजाऊं वैसे अष्टमी बाद
चाहता हूं। श्री चम्पालालजी को
यहां बैठे हैं वे चाहते हैं इन दिनों
आजाय तो लिख जाय। श्री विश्व
केदेवं ... मोहे ...

श्री ७। चौबुर्जा-भरतपुर
१-५-६१

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र नानामहाराज के पुनीत पादपद्मों में दासानुदास गोविन्द के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वतः कुशलम् निवेदन है कि इनदिनों में ता. २७-२८-अप्रेल के लिखे पत्र मिले हैं और कोई पत्र नहीं मिले इस कारण भी चिन्ता आयी कर रही है आपका लिखा पत्र अबतक नहीं मिला है।

इच्छा तो एसी रहती है कि श्री-चरणों के सान्निध्य में ही इस समय रहूं परन्तु आज आपने इनदिनों क्यों इस नूतन माया जाल में डाल दिया है इच्छा आपकी परन्तु जी कभी२ उड़कर भी श्रीचरणों के समीप ही पहुंचना चाहता हूँ और कभी२ अपने ऊपर ग्लानि भी आती है कि सब छोड़ [illegible] वहीं चलूं अस्तु भगवदिच्छा

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

पहला मोड़ First fold



अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

श्री रमानन्द जी से मिला था उनका अभिप्राय यही था कि पहले पद्य फिर अनेक पद्य फिर संस्कृत टीका फिर भाषा टीका यह सब पृथक् २ रूप में छपें अर्थात् पहले आठों मूल पद्य ~~[illegible]~~ फिर दूसरे पूरे फिर संस्कृत टीका पूरी फिर भाषा टीका पूरी श्री दुर्गा जी साथ थे उन्होंने इसे पसन्द नहीं आप जैसी स्वीकृति दें लिख दूं अथवा आपने लिख दिया हो तो ठीक है रही प्रूफ की बात सो उनको लिख देता हूं वे भेज देंगे अभी मुद्रणारम्भ नहीं हुआ है श्री रमानन्द जी श्री इस समय कुछ ज्वर से मैं ही हैं संभवत: अब ठीक हो गये होंगे।

गर्मी का कारण है अन्यथा एक तरह प्रकार जैपुर रहना इस कार्य के लिये पर्याप्त है दूसरे वृन्दावन वाले श्री ब्रह्मचारी जीने श्री पुरुषोत्तम मास के लिये ही कहा है। अभी तक नरेश देहली से लौट कर नहीं आये हैं सुना है गत कल गोवर्द्धन आगये हैं वहां प्रदक्षिणा कर रहे हैं एकाध दिन में यहां आजायेंगे आने पर उनसे मिलूंगा विचार संभवत: द्वि. ज्ये. शु. अथवा आषाढ़ कृष्णा में रहेगा। शेष कभी लिखूंगा। आने की अब आशा हो तभी आजाऊं वैसे अष्टमी बाद ही आना चाहता हूं। श्री चम्पालाल जी कावेश्वर यहां बैठे हैं वे चाहते हैं इन दिनों वह पुस्तक आजाय तो लिख जाय। श्री विश्वम्भर सहित श्री दोनों मनोहर योगेन्द्र को जय श्री कहते हैं।

श्री ७। चौबुर्ज-भरतपुर
१-५-६१

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र बाबामहाराज के पुनीत पाद पद्मों में दासानुदास गोविन्द के कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हो। सर्वतः कुशलम्
निवेदन है कि इनदिनों में ता. २७-२८-अप्रेल के लिखे पत्र मिले हैं और कोई पत्र नहीं मिले इस कारण भी चिन्ता आयी करती है आपका लिखा पत्र अबतक नहीं मिला है।

इच्छा तो ऐसी रहती है कि श्री-चरणों के सान्निध्य में ही इस समय रहूं परन्तु न जाने आपने इनदिनों क्यों इस नूतन मायाजाल में डाल दिया है इच्छा आपकी पर जी कभी२ उड़ कर भी श्रीचरणों के समीप पहुँचना चाहता है और कभी२ अपने ऊपर ग्लानि भी आती है कि सब छोड़ कर वहीं चलूं अस्तु भगवदिच्छा।



अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

आदरणीय सच्चिदानन्द कन्द

जयपुर [illegible] १० | ५८

आपकी जय हो।

आपका अमूल्य पत्र मिला पढ़ कर सन्तोष हुआ साथ ही कुछ गर्व भी हुआ कि इतनी महान शक्ती भी इस तुच्छ जीव को इस प्रकार बढ़ावा दे रही है सचमुच आप तो आप ही हो आपका सद् उपदेश प्रत्येक दशा में हितकारी है आपका संकल्प ही इस प्राणी को उबार सकते हैं क्यो कि यह तो चारो ओर से विषय वासना के फेर में पड़ा हुआ है।

आपकी आज्ञानुसार आपके पत्र के प्राप्त होने पर आज ही श्री मोतीलाल जी शास्त्री से मिला उन्होने आपको दण्डवत प्रणाम कहे हैं और अनुरोध किया है कि आप जयपुर को भी पवित्र करके उन्हे दर्शन दें। छपाई के हिसाब ३०) फार्म १६ पेजी होगा ३०) प्रति फार्म बढ़ाई के होंगे अगले हजार पर ७) प्रति फार्म छपाई बढ़ाई होगी। कागज की स्थिति बड़ी खराब है भाव बहुत बढ़ गया है कागज २२ से ३० तक है उसकी जिम्मेदारी प्रेस की नहीं होगी - आप जब भी काम देंगे कार्य चालू हो जावेगा। भगवन् अब आप शीघ्र पधारें और इस शुभ कार्य को सफल कर दें।

प्रत्येक जीव पूर्ण व अपूर्ण है किन्तु परिपूर्ण वही है जो पूर्ण व अपूर्ण दोनो ही हो किन्तु परिपूर्णता आपकी दया से ही बन सकती है और इसकी प्राप्ती जब हो सकती है जब हृदय में उत्कण्ठा उस प्रकार हो जिस प्रकार कि

"कामीय नारि पियारि जिमि लोभी प्रिय जिमि दाम
तिमि रघुनाथ निरन्तर ही प्रिय लागहु मोहि राम"

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये

श्री आनन्द जी जी

C/o Sh. JAIPAL CHABRA
ALFA ENGINEERING Works
Station Road Bhandup
BOMBAY



भेजने वाले का नाम और पता :-

10/9/58

હે અખિલેશ્વર વહી લાલસા હૃદય મેં ભરદો ઔર
પરિપૂર્ણ કરદો - દયાનિધે ક્યા કહૂ આપસે ક્યોંકિ
કહને વાલે, સુનને વાલે વહ સ્થાન જહાં પર યહ દોનો ક્રિયા
હોતી હૈં વહ ભી આપ હી હૈં।

માતાજિ ય જયપાલજીકો ભી મેરી હાથ જોડકર
શાનર કહદેના

શેષ કુશલ હૈ આપકી દયા હી સબ કુછ હૈ।

પરમારજ
શાસ્ત્રી

[...] भरतपुर

[...]२-५५

अनन्त श्रीवि[...] चरणसरोरुहोंमें
दासानुदासके के [...] सर्वतः कुशलमस्तु।
उसदिन निद्राग्रस्त त[...] न जाने आपने क्या २
पूछा और मैंने क्या उत्त[...]मा करें, शारीरिक स्थिति
इनदिनों ४ मास से ठीकसी नहीं चलरही है १०-५ दिन कुछ
ठीक रहता हूं पुनः जुकाम खांसी ज्वर होजाते हैं ऐसेही चलरही है
सो यह तो कुछ चिन्ता की बात नहीं है, परन्तु उसदिन आपके
दर्शन करके शारीरिक स्थिति से अवश्य चिन्ता होगई है
कृपा करके इतने लम्बे समय तक पत्र न दें ऐसा न करनेकी
प्रार्थना है पत्र मिलने से कुछ तो सन्तोष होही जाता है।
आई हुई डाक भेज रहा हूं। इच्छा होते हुए भी परिस्थिति वश
न ठहर सका इसके लिये पश्चात्ताप ही है सम्भवतः
श्री दुर्गाजी आज आवें [...] होसका तो उन्हें लेके
श्री श्री ता[...]ऊं। शेष कुशल है
श्री जैन साहब [...]म निवेदन करते हैं।
श्री पुरोहित [...] रहे हैं। अब भी
ज्वर होने से [...]रहा हूं पुनः लिखूंगा।
[...] - गोविन्द

सभी को[...]

TELEGRAMS:
"JUGDEESH-CHEMISTS."

ESTD. 1924.

TELEPHONE 5574.

K. D. JUGDEESH & CO.

CHEMISTS & DRUGGISTS.

CHANDNI CHOWK.

Ref. No.

श्री. DELHI ५ । ८ 1948

अनन्त श्री: पूज्य पाद [illegible] महाराज [illegible] पद्मों में
कोटिशः प्रणाम स्वीकृत हों [illegible] कुशलमस्तु । कल रात्रि को
कुशल पत्र मिला पढ़ कर [illegible]न्नता हुई, श्री पं० जगदीशजी ने
कोई समाचार नहीं दि[illegible] व काशी का कारण होगा।
मैं परसों रवि को भरत [illegible] सुना है कि २-३ दिन पूर्व
श्री रघुनाथ उन्नीकर गये [illegible] स्नात अभी कुछ हुआ नहीं
श्री हरदेव जी का अभी [illegible] कोई कुशल पत्र उसके पश्चात्
आया नहीं, श्री शिव कु[illegible] जी उसी दिन सा[illegible] की ट्रेन से गये
आगरा में मैंने को खड़े का आग्रह किया था / श्री कस्तूरीलाल
जी को सप्रेम जय शंकर कहें / श्री बाबू केशव देव जी सादर
साष्टांग प्रणाम कह रहे हैं / श्री अम्मी जी हरि आदि सभी
ने जय शंकर कहा है।

आपका कृपाभिलाषी

गोविन्द

श्री:

बरसालपुर
२३.१०.१९७१

श्रीमान् पं. जयशंकर जी,

प्रणाम।

समाचार यह है कि श्री स्वामी जी महाराज बरसालपुर [illegible]हुँच गए हैं और हमारे यहाँ ठहरे हुए हैं। वे [illegible] दो दिन में सोहाना पहुँच जाएँगे। शेष सब [illegible]कुशल है। मेरी ओर से आपको प्रणाम। श्री स्वामी जी की ओर से सबको जय शंकर।

आपका सेवक
मंगल जीत
बरसालपुर
पो. ईवाराकलां
तह. रोपड़
जि. रोपड़।

यहाँ काट कर खोलिए To open cut here →

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



To

पं जटाशंकर जी
Pt. JataShankar ji
Vill & P.O. Sohana (सोहाना)
Teh. Kharar (खरड़)
Distt. Ropar (रोपड़)

पहला मोड़ First fold

दूसरा मोड़ Second fold



तीसरा मोड़ Third fold

प्रेषक का नाम और पता :— Sender's name and address :—

13/10/71

Mangal Ji M.A., B.Ed.
Barsal Pur
Ropar

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

Parasram Harnandrai,

PHONE { 5166 (OFFICE) 6322 (RESI)

BENTLEY'S A. B. C. & PRIVATE
TELEGRAMS: "SUNBEAM"

KATRA TOBACCO,
KHARI BAOLI:

Delhi, ४-२-194८

श्री गोपाल जी जयते

श्री पूज्य पं. गोविंद दत्त जी मिश्र श्री पं. हरदेव जी से ज्ञात हुआ कि आपके खराब हो रहा है सो उचित है आराम हो गया होगा यदि आराम न नहीं हुआ हो तो जांघ के सोधित मधु के साथ ले और नौ न का तैल लगावें और समाचार न भेजें कृपा करके भेजें और श्री पूज्य पाद २०८ आचार्य जी को प्रणाम

आपका
सदानीराम परशराम

Bhagwan Dass
B. A. LL. B. Advocate.
Ref. No.........

LEHRA GAGA
Dated 22-4-1953

श्रीमान् पूज्यपाद श्री शरद मुखर्जी महाराज,

जय गुरु!

आप का पत्र मिला। इस के लिए मैं आप का बड़ा आभारी हूं। आज ही आप का पत्र प्राप्त हुआ! सम्भव है कि यह पत्र आप के जाने तक देहरादून पहुंच जाये। आज 22 अप्रैल हो गया है। यदि मैं यहां से चलूंगा भी तो सम्भव है कि आप के दर्शन न कर सकूं। आप के प्रोग्राम के अनुसार आप को मिलना कठिन दीख पड़ता है। वैसे पं० चालतराम जी यहां नहीं हैं — वरना आप के दर्शनार्थ अवश्य ही चले पड़ता। पं० चालतराम जी आदन प्रात: जी को चले गये हुए हैं। आप को मिलने को मन बड़ा उत्सुक रहता है। यदि यह पत्र आप के हाथ लग जाये तो आप जहां भी जावें मुझे अपने पते से सूचित करें

सब ही कुशल आनन्द है। और उन सन्देशों
का निर्वाह करने के लिए आप से मिलना
आवश्यक समझता हूं। मेरे योग्य कोई आज्ञा
हो तो निःसंकोच लिखें।

भवदीय सेवक
भगवान दास
लहरा गागा (पंजाब)

पूज्यपाद श्री श्री ६ चरणों

में कोटि २ प्रणाम

पत्री ३-४ मिल चुकी

आती है उत्तर दूँ आपका

... का विचार हो लिखना

छोड़ा हो तो बतई

जाऊँ श्री सेवाजी

के शरीर पर

क्या हाल है

... लिखो ...

सेवक ...

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये





॥ श्री-त्री ॥

श्री जयपाल छाबड़ा

प्रकाश इन्जीनियरींग वर्क्स

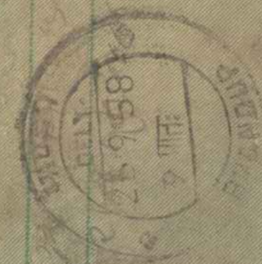
स्टेशन रोड मान्डूप

बम्बई नं. ८०

तीसरा मोड़

पहला मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-



श्री. [illegible]

प्रणाम श्री/ [illegible]

पत्र दोनों आप [illegible]

पढ़कर अपार प्रस [illegible]

न पार कौन पा सकता है आप [illegible]

ही मालिक हैं आप के पास आकर [illegible]

की भावना आते ही सब तरह तब [illegible]

मैं। श्री श्री।। के चरणों में जुड़ जा [illegible]

न्त उपस्थित हो जाऊंगा और [illegible]

जैसी आज्ञा होगी वह करूंगा आ [illegible]

है मैं जैसा हूँ वैसा आप [illegible]

इति प्र [illegible]

श्री/ [illegible]

अन्तर्देशीय पत्र

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये



[illegible] [illegible]

भांडुप



[illegible] [illegible]
[illegible] वर्क्स स्टेशन रोड भांडुप
भांडुप बम्बई नं. ४०
बम्बई नं ४०

पहला मोड़

तीसरा मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :-

विद्वद्वरकल श्रीराधाकृष्ण धार्मिक संस्थान् (रजि.)
दिल्ली
श्री भवन B–43, पर्यावरण कम्पलेक्स (साकेत के सामने) इन्दिरा गान्धी ओपन यूनि० रोड, नई दिल्ली-110 030
Vidwad Varkal Shri Radha Krishan Dharmik Sansthan (Regd.)
Shri Bhawan, B-43, Paryavaran Complex, Opp. Saket,
Indira Gandhi Open University Road, New Delhi-110030 (India)

Ref. No...............   Dated..06.3.2001

!! शोक-प्रस्ताव !!

विद्वद्वरकल श्री राधा कृष्ण धार्मिक संस्थान (रजि०) के तत्वावधान में श्रद्धेय परमादरणीय श्री रतनलाल जी अग्रवाल (प्रबन्धक, संस्था) के आकस्मिक निधन से इस संस्था को अपूर्णीय क्षति हुई है उसकी पूर्ति पूर्णतया असंभव है। लेकिन ईश्वर की इच्छा बलवान है इस सिद्धान्त के आगे हम नत-मस्तक हैं। सनातन धर्म के विख्यात तत्वदर्शी एवं कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में श्री अग्रवाल जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। धार्मिक अभिरुचि और श्री गुरु महाराज के चरणारविन्द के प्रति उनका अनुराग युगों युगों तक याद रहेगा। उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाये उतनी कम है अंत में हम सब भगवान शंकर के चरणारविन्द में यही प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें और शोक-संतप्त परिवार को यह कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करें।

शोक ग्रस्त संस्था के समस्त पदाधिकारियों की ओर से मैं अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूँ।

V.D. Bakshi
[वी० डी० बख्शी]
प्रधान

कि ५-६ माससे "श्री" जी पता ज्ञात नहीं है पता
मिलने पर सेवामें भेजूंगा इसके बाद कोई उत्तर
नहीं है दोनों पत्र एक साथ ८-७-६७ से मेरे
समीप हैं / सुरक्षित है।

श्रीपुरोहितजी इन दिनों श्री जगन्नाथ पुरी
जाप के सुना है आगये हैं एक दो ... से
मिलने पर जयश्रीक कहूंगा।

श्री ... करवाजी की पुत्री ... को
... हुए ता. १५- ...
सम्पन्न हुआ।

श्रीमनोहर लाल इ ... कहूंगा
श्रीमनोहर लाल गुप्त मास्टर आजकल आ ... हैं
श्रीज्योतिषीको सादर जयश्रीक ज्ञात हो।
श्रीशरणजी को पत्र लिखे गा कई दिन से
उनको पत्र नहीं मिला है।
श्री दुर्गादत्तजी ने अपने कई पत्रोंमें
आपको प्रणिपात लिखने को लिखा है

गृहिणी तथा धर्मेश्वर को सादर जयश्रीक ज्ञात हो।
श्री तिवारीजो को जयश्रीक पूर्वक बधाई दूंगा।
श्री पं० मदनलालजी की मृत्यु का समाचार तो
आपने पत्रमें पढ़ही लिया था विशेषता ...
रही कि वे अन्तिम समय तक आपके बता ...
जप को सावधानी से करते रहे और बात ... जे
श्री ... । इससे १५ दिन पूर्व वो ...
... अकस्मात् शरीरान्त ...
... ता दत्ता को ... और
...
श्री ... मदनलालजी के पुत्र ...
ति... ता ... ७-६७ को शिवपुरी (जनाति) पर
से सानन्द सम्पन्न हो गया है / उन्हें जयश्रीक
कहूंगा। मेरा स्वास्थ्य भी ... कामके कारण १०/
ऐसे ही चल रहा है / शेष प्रत्यक्षमें मिलने पर
श्री मा. भगवान दासजी, श्री वैद्य बृहस्पति देवजी, लि...
श्री बख्शीजी, श्रीराज कुमारजी बांके लाल जी गाय...
चार्य श्री रामरतनजी, श्री पं० - - - दत्तजी ४९१
श्रीबाल कृष्णजी बख्शीजी के मामाजी आदि सभीको
सादर ... ज्ञात हो। गोविन्द: २५-७-६७

श्री: । चौबुर्जा - भरतपुर

२३-७-६७

अनन्त श्री सर्वतन्त्र स्वतन्त्र प्रव्राज करुणामूर्ति के अरुण मृदुल चरणों में कोटिश: प्रणाम स्वी[illegible] हैं। सर्वत: कुशलमस्तु । २१-७-६७ का लि[illegible] दिनों मिला प्रसन्नता हुई। इससे पूर्व १०-१२ कोई पत्र [illegible] प्राप्त नहीं हुआ सम्भव है पोस्ट मैनों के परिवर्तन [illegible] क्योंकि इन दिनों में कई पोस्टमैनों [illegible] होगया है अस्तु भगवदिच्छा।

[illegible] जी को [illegible] हुआ [illegible] [illegible] हैं दाँई ओर के पैर [illegible] चलता है - कुछ शोथ भी है मेरे [illegible] आने से पूर्व ही हस्पताल दाखिल कराया गया है इन्जेक्शन गोलियां चल रही हैं, वैसे स्वयं उठते बैठते हैं खा पी भी लेते हैं आशा है जल्दी ही कुछ दिन में बोलने भी लग जायेंगे।

दोनों पत्र जो आये हैं उनमें एक तो माधव जी का है एक श्री मारुती मशावंश. निम गांव [illegible] का है इनके उत्तर में श्री माधव जी को कार्ड लिखा दिया था

INLAND LETTER

अन्तर्देशीय पत्र



इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

पहला मोड़ first fold

दूसरा मोड़ second fold

तीसरा मोड़ third fold

श्री रमानन्दजी का पत्र आया है अभी
तक मुद्रणारम्भ नहीं हुआ है ५-७ दिन
में प्रारम्भ हो जायगा अथवा जोधपुर
जाकर करायेंगे ऐसा उन्होंने लिखा है
वे भी आजकल कुछ नौकरी सम्बन्धी
झगडे में पडे हैं विशेष तो इन्होंने कुछ
बताया नहीं।

श्री बाबूलालजी को पुन: ज्वर
होता है, खांसी भी यथा पूर्व है
मैं शीघ्र ही आने की सोच रहा हूं।
श्री आकूतजी का अभी तक कोई
पत्र नहीं आया मुझे पत्र लिखे
काफी समय हो गया उनकी
प्रतीक्षा है।

श्री जज साहब के समाचार मुझे वहीं से
उर्दू में पत्र आया था उससे मिले आपका
पत्र अथवा चिट्ठी नहीं मिला। अभी
तक वहां को पत्र नहीं लिखा और न
लहरा जागा समझ में नहीं आता
क्या लिखूं और उसी दिन से
घबराहट रहता है अभी तो उन का
स्मरण दु:खदायी है।

वृन्दावन वालों ने भी पुन
मास के लिये कहा है क्या उ
मिलकर आऊं। शेष कृपा
सभी को जय श्री कृष्ण
आपका — गोविन्द:





श्री:) चौकुञ्जी-भरतपुर
४-५-६१

अनन्त श्री पूज्यपाद बाबा महाराज के
पुनीत पाद पद्मों में दासानुदास गोविन्द के
कोटिश: प्रणाम स्वीकृत हों। सर्वत: कुशलमस्तु
आपका कुशलपत्र न मिलने से आन्तरिक
चिन्ता है कृपया कुशल पत्र देने की कृपा
करेंगे।

आज H.H. के यहां से सूचना मिली
कि २२ जून को विवाह मुहूर्त निश्चित
किया है अत: उसके लिये अन्य
ग कार्यों के मुहूर्त दो, अत: यदि
सब तयार होगये तो कल H.H. से मिलूं
सुना जारहा है कि वे आगामी १५ ता. तक
मैसूर जारहे हैं।

श्रीः। माण्डुप २२-३-५४ प्रातः ९ बजे

प्रनन्त श्री विभूषित पूज्य पाद श्री "श्री जी" महाराज के
पुनीत पाद पद्मों में, मेरा और श्री त्रिवेदी का साष्टांग सादर प्रणाम
स्वीकृत हो। सर्वतः कुशलं मस्तु। हम दोनों शुक्रवार की रात्रि को
कोटा विश्राम कर रवि को प्रातः मुम्बई पहुंचे स्टेशन पर
श्री कस्तूरीलाल जी, तथा उनका P. A. मिला कुछ घण्टे
ईश्वर भवन में विराम कर सायंकालीन ५ बजे की ट्रेन से
पुण्य पत्तन गये वहां शनि तक ठहर कर शनि की रात्रि को
मुम्बई आगये हैं कल यहां अच्छी तरह से परिभ्रमण किया है
साथ में पं. बिहारीलाल जी "मेरी भावी सन्तान" वाले भी आज
श्री कस्तूरीलाल जी के समीप हैं २-४ दिन घूम
कर आने का विचार है। पूना में एक मद्रासी ज्यो. को देखा
उसके पास ताड़ पत्र पर तामिल भाषा में लिखी हुई पुस्तकें हैं
नन्दी नाड़ी - कौशिक नाड़ी आदि उनके नाम हैं किसी भी व्यक्ति
की जन्मांग अथवा अंगुष्ठ देखकर वह जीवन की २-२ दिन तक की
घटनाओं का उल्लेख करता है नन्दी नाड़ी में माता पिता का नाम
स्त्री का नाम संतान सुख और भाग्योन्नति आदि का उल्लेख है
शेष प्रत्यक्ष में। यहां से एक सहस्त्र एक श्री त्रिवेदी जी को
दो सौ इक्यावन इसको साढ़े चार सौ मार्गव्यय कुल सत्रह सौ दो मुद्रा
की प्राप्ति हुई है शेष कुशल है। कल रवि को सायं भारतीय
विद्या मन्दिर में श्री त्रिवेदी जी का भाषण भी हुआ यहां के प्रायः प्रसिद्ध सभी
ज्योतिर्विद् उपस्थित थे सभी से परिचय भी होगया है श्री स्वाध्याय
सदन संस्था की रूपरेखा लोगों को बतला दी गई है शेष प्रत्यक्ष में
श्री पं. बिहारी लाल जी का कहना है कि आप लोग ४ मास
यहां रहें तब यहां से संस्था के लिये कुछ सञ्चय हो सकेगा

K. T. O

श्री कस्तूरी लाल जी एवं उनके परिवार का सादर
जय शङ्कर लीजिये श्री जयपाल जी अभी मिले नहीं हैं
शेष — चरण कृपा
आपके हम दोनों
मिश्र – त्रिवेदी

श्री चरणोंमें सादर साष्टाङ्ग प्रणामानन्तर निवेदन है कि हम
चैत्र कृष्ण ११-१२ तक दिल्ली पहुंच जावेंगे।
आशा है श्री चरणोंके दर्शन भी दिल्ली होंगे।
इस ओर क्षेत्र तय्यार किया जा रहा है। दूसरी
बार कृता कीर्ति आशा है। श्रीविकृत जोड़ा
वन लिपयदिया है।

विनीत :-
ह. श्री. त्रिवेदी

अन्तर्देशीय पत्र
इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये

भेजने वाले का नाम और पता :-
श्री गोविन्द मिश्र
मेडिको सर्जिकल...
स्टेशन रोड, माण्डुप
बम्बई

BHARATPUR





सुधार पर है अब। चिन्ता
की कोई बात नहीं है हां
अभी मकान की रचना के कारण
तथा श्रीमा जी, एवं गृहिणी की
अस्वस्थता के कारण यहां का वाता-
वरण अभी "श्री" जी के पधारने
योग्य नहीं है क्योंकि अव्य-
वस्था सी रहेगी। अत: उन्हें
यहां कष्ट पहुँचने की आशंका
के भय से यह लिखने का साहस
किया है। शेष कुशल है

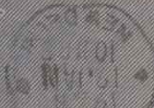
श्री पं. महेश चन्द्रजी "श्री"
जी सादर साष्टांग प्रणाम
लिखवा रहे हैं। आपके
आपके परिवार में
आप सहित सभी को
सभी का जयश्री कृ
सीता हो। आपको
मिश्र गोविन्द

अभी २ श्री पं० वलराम नाथ जी का पत्र
आया है वे "श्री" जी का विस्तृत समाचार एवं
प्रोग्राम जानना चाहते हैं; उन्हें भी सूचित
करें।

१८-१-६८ आ:। चौबुर्जा-भरतपुर

श्रीमान्
लाला राजकुमारजी! जय श्रिकृष्ण। आपके द्वारा प्रेषित कार्ड आज अभी मिला, प्रसन्नता हुई। पुस्तकें सिकन्दराबाद पहले ही रेलवे पार्सल द्वारा भेजी जा चुकी हैं। पहले पत्र में गलती से लिखना भूल गया था आप चिन्ता न करें!

अनन्त श्री "श्री" जी के चरणारविन्दों में कोटिशः प्रणाम निवेदन करें। मेरे स्वास्थ्य अब प्रति







पहला मोड़ First fold

श्री:।

पुलिस थाना – गहीबाजना
जि० मथुरा – उ०प्र०
13-3-80

श्री श्री १००८ श्री बाबा महाराज के पावन चरण कमलों में मेरा कोटिशः साष्टांग प्रणाम स्वीकृत हो। [illegible] जी (अभिलाषी) महाराज के अनुग्रहात्मक आदेश से आज मुझे श्री चरणों में पत्र प्रेषित करने का यह पावन सौभाग्य प्राप्त हुआ है। श्री चरणों की कृपा से मैं सपरिवार स्वस्थ हूँ तथा यहां थाना गहीबाजना पर मुख्य आरक्षी के पद पर कार्यरत हूँ। श्री चरणों की कुशलता के लिये भगवान सहित भगवान चन्द्रशेखर से प्रार्थना करता हूँ।

दि० 4-3-80 को मथुरा पहुंचने पर पं० जी महाराज से श्री चरणों की कुशलता ज्ञात की तो बतलाया कि श्री जी महाराज की ओर से पत्र यहां प्राप्त हो रहे हैं और यहां से भेजे हुए पत्र वहां नहीं पहुंच रहे हैं क्योंकि पत्र बदस्तूर भेजे जा रहे हैं। अतः इसी कारण मुझे भी श्री चरणों में पत्र भेजने का आदेश किया है। अतः पत्र (पुष्प) श्री चरणों में प्रेषित है।

यदि श्री चरणों का स्वास्थ्य [illegible] अनुकूल हो तो मथुरा पधार कर दर्शन देने की कृपा करें। तथा करबद्ध निवेदन श्री चरणों में यह है कि "श्री आत्मविलास:" का द्वितीय संस्करण जो विशुद्ध हिन्दी टीका सहित जल्दी से प्रकाशित होना था को तथा शीघ्र प्रकाशित करा कर भक्तों को लाभान्वित करने की कृपा करें।

[illegible] जी को तथा जहां श्री जी महाराज

मित्र विराग हे हैं उस भवन एवं स्वाज के सभी पुण्यभागा निवासियों को मेरा कोटिशः प्रणाम (श्रीहरिहर)

इति: शुभम्

श्री चरण किंकर –
– शरणागत
विश्वनाथ सिंह
H.C.
पुलिस थाना
गढ़ीवागना.
P.O. कोट
जि० भरतपुर (राज०)

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD





निमार्पित
श्री श्रीजी c/o श्री सीताराम जी
B.66 मोतीबाग साउथ
नं० 2 नई दिल्ली.

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

दूसरा मोड़ SECOND FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

विश्वनाथ सिंह 13/3/80

पिन PIN

भारत अन्तर्राष्ट्रीय डाक टिकट प्रदर्शनी 1980
INDIA INTERNATIONAL STAMP EXHIBITION 1980
25·1·1980 - 3·2·1980

यहां काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

[illegible]पुर
ता. १६-१२-६०

आदरणीय श्रीमान मिश्रा जी साहब [illegible]

अत्र कुशलं तत्रास्तु। आपको हाल यह है कि मेरी तबीयत तारीख ११ $\frac{१२}{६०}$ से ही खराब फिर होगई थी डबल निमोनिया बुखार १०५ व १०५ $\frac{१}{२}$ डिग्री तक आज तबीयत आपके आशीर्वाद से ठीक है मैं कल ता. १५ $\frac{१२}{६०}$ को अस्पताल भी गया था माथुर सा० से मिला उन्होंने बतलाया कि Fluid फ्लूड वगैरा कुछ नहीं केवल सर्दी के कारण ऐसा हो गया है औषधि पहली ही चलाओ वही ठीक है। इस पर मैंने कहा कि डाक्टर सा० यहाँ अपनी फीस न होने के कारण तो मुझे उचित औषधियां नहीं मिल रही हैं इस पर (कुछ सवाल करते) उन्होंने कहा कि भाई ऐसी बात नहीं है खांसी को एकदम बंद नहीं करना चाहता हूँ पहले फेफड़ों को ताकतवर बना दो यह खांसी वगैरा अपने आप ठीक हो जावेगी। उनकी जो औषधि चल रही है वह है एमावस्टीन की इ[illegible] हफ्ता में २ दिन व शाम को - आइसोनेक्स की गोली [illegible] खांसी [illegible] [illegible] रखीया अवश्य यह बुधवार तक कुछ पहुंच जा[illegible] श्री गिरिजाशरण जी से भी इस निमोनिया के कारण ही नहीं मिल सका हूँ। ईश्वर इच्छा। आपने फरमाया था कि मुझे लिखना मैं श्री वैद्य जी से तुम्हारे विषय में ~~कुछ~~ बात करूंगा। इसलिये हो सके तो बात करके लिखने की कृपा करना।

कमला के लिये जो जयपुर वाला लड़का पिताजी देख कर आये थे वह मैंने देखा मुझे पसन्द नहीं आया उसका स्वास्थ्य खराब था इसलिये मैंने उस लड़के के विषय में मना कर दिया अब देहली कानपुर में लड़का देखना। यह चिन्ता विशेष है जब तक इस कार्य से निवारण नहीं होता है तब तक मुश्किल ही है। विशेष क्या लिखूं ईश्वर इच्छा प्रबल है जहां जैसे संस्कार होता है होगा।

चि. ऊषा की तबीयत फिर खराब होगई थी अब ठीक है अस्पताल चारबाग का इलाज चल रहा है - पूज्य श्री माजी ने आपको मना कर बतलाया कि गिरिजाशरण से मिल कर जयपुर जाय।

शेष कुशल है।

[illegible]

॥ श्रीः ॥

भरतपुर
दिनाङ्क 11-2-1980.

सेवामें

प्रातःस्मरणीय परम पावन अनन्त श्री श्री श्रीजी महाराजजी की पावन श्रीचरण धूलि में ढोक एवं अनन्त जयशङ्कर जयशङ्कर की ज्ञात हो।

कुशलक्षेम के उपरान्त मेरे एवं पुत्र के जन्म-दिवस उत्सव के अवसर पर निरन्तर जयशङ्कर जयशङ्कर की समर्पित। कृपाकर स्वीकार करें।

आगे आदरणीय पण्डितजी के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि आप दिल्ली ही विराजे हुये हैं। अतः प्रस्तुत पत्र तदनुसार सेवार्पित कर रहा हूँ। आपकी असीम कृपा से यत्र तत्र सर्वत्र कुशल है। आपका प्रकाश सबको आलोकित कर रहा है। बस आपकी दया-दृष्टि सदैव बनी रहे यही श्री भगवती एवं जगदाधार प्रभु से प्रार्थना है।

आपका अब स्वास्थ्य कैसा है। श्री जगदम्बा जी भगवती माता से बारम्बार जयजयकार सहित प्रार्थना है कि आप भगवन्! पूर्ण प्रसन्न मुद्रा में होंगे एवं जगत् का कल्याण करेंगे। सब आपका ही जयजयकार है।

आदरणीय पण्डितजी कुशलपूर्वक हैं। उनका यथायोग्य जयशङ्कर ज्ञात हो।

आपके अपने खाते (ACCOUNT) में धनराशि रुपये 425=20 पैसे हैं। अग्रे आपकी कृपा-दया दृष्टि एवं अभय का वरद हस्त।

माताजी पिताजी एवं समस्त परिवारीजनों का यथोचित जयशङ्कर प्रणाम ज्ञात हो। बच्चों का आपकी पवित्र श्रीगंगाजी श्री-चरण-रज में स्नान। शेष सब आपकी कृपा।

पूज्य श्रीचरणों में समक्ति पूर्वक

श्री अमृत मंदिर के मास्टरजी एवं मास्टरनीजी को सादर नमस्कार ज्ञात हो।
बाबूजी श्री सीतारामजी को [illegible] नमस्कार
एवं अन्य समस्त प्रेमी सज्जनों को भी नमस्कार भी ज्ञात हो।

वत्स —
[illegible]
(डीटेवाल)

"नित्य नवीन प्रकाश" पुस्तक उपलब्ध हो तो शीघ्र भिजवाने की कृपा करें। वांछित मूल्य सम्प्रेषित कर दूँगा। प्रणामपूर्वक इति श्री।

यहाँ काट कर खोलिए TO OPEN CUT HERE

अन्तर्देशीय पत्र कार्ड
INLAND LETTER CARD



सेवामें

श्री श्री जी महाराज जी C/o श्री रविशर्मा जी
त्रिवेदी जी, श्री अमृत मन्दिर (मास्टरजी
मास्टरनीजी का मकान), नन्दा मोटर ड्राइविंग कालेज
के पीछे — A.I. देवली रोड, खानपुर नई दिल्ली 62

पिन PIN

पहला मोड़ FIRST FOLD

तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

प्रेषक का नाम और पता :— SENDER'S NAME AND ADDRESS :—

11/2/80

छोटेलाल,
श्री सन्तोष सदन, मथुरा गेट,
भरतपुर (राजस्थान)
पिन PIN 321001.

खुराक	
उम्र (वर्ष)	गोलियां
0-1	1/2
1-4	1
4-8	2
8-14	3
14-	4
एक खुराक काफी	

बुखार!
हो सकता है मलेरिया ही हो!
क्लोरोक्विन गोलियां लें
(गोलियां खाली पेट न लें)

छप सका तो इसमें भी आपके संशोधन करा ...

हिन्दु लेख ४-५ दैनिक और मासिक पत्रों ... का ... हूँ यदि इंगलिश अनुवाद हो और पत्रों में भी छप सकेगा। हिन्दू और ... शब्दों का संकुचित अर्थों में प्रयोग होने से देशवासियों को ... पड़ रहा है - यदि आप कभी इधर ... ... पर्याप्त लाभ हो सकेगा

समाचार लिखता हूं। जब से ... हुए हैं मेरा सारा पूजा का कार्य ... होगया है चित्त पूजा में जाता भी ... नाम मात्र के लिये फिर मैंने इधर ... वह भी छोड़ दी। अब आपके ... के अतिरिक्त मुझसे तो कुछ होने से ... गुरुदेव अपना ... के आधार पर आपकी शरण हूं जो ... समझें करें।

श्री राजकुमार जी तथा लाला जी को ... घर में सबको यथायोग्य कहें। बाकी घर में ... कृपा है। लिखें आपका इधर आने का कब तक का कार्यक्रम है।

आप का ... दास।

नन्दकिशोर वैद्य

ॐ ज्वालामुखी
३-९-६५.

श्रीमन् माननीय पूज्य आचार्य श्री [illegible]
दास नन्दकिशोर का प्रणाम स्वीकार हो।

(अत्रतत्रास्तु) आशीर्वादात्मक पत्र मिला.
मेरा अहोभाग्य होता यदि मैं आपकी सेवा में
उपस्थित हो सकता. यहां लगभग डेढ़ मास से
[illegible]ता जी बीमार है बीस दिन पहिले तो
[illegible] ही है परन्तु अब कुछ चैतन्य [illegible]
[illegible] ठ बैठ नहीं सकते हैं दुर्बलता बहुत है
[illegible] अब रोग कोई नहीं है, थोड़े २ दिनों
किसी २ दिन घबरा जाते हैं इसलिये
आजकल घर छोड़ना कठिन है।
मैंने "धर्म क्या है" और "हम एक हैं" यह दो
लेख लिखे हैं "हम एक हैं" इस लेख का आधार
हिन्दूराष्ट्र अथवा धर्म" लेख ही है यदि आप
नागल आयें तो यहां जरूर आजावें ताकि आपको
दिखाकर बाद में प्रकाशित कराऊं। "धर्म क्या है"
[illegible] पत्र में प्रकाशनार्थ भेजा है यदि न

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

तीसरा मोड़ Third fold

दूसरा मोड़ Second fold

पहला मोड़ first fold



अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

यहाँ काट कर खोलिये To open cut here →

मा. प्रियवर श्री गोविन्द जी

लश्करा से चानन राम की

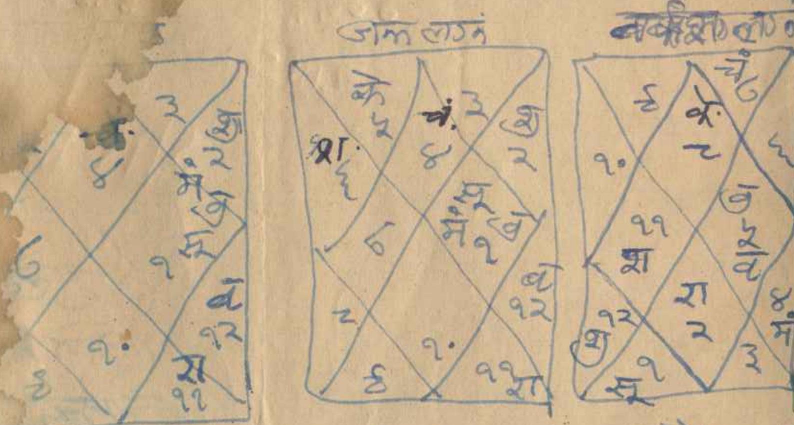
नमस्कार

श्री बापू आपके यहां ही विराजते होंगे आपका
सौभाग्य मेरी कोटिश: प्रणाम श्री चरणो में
अर्पित करें और प्रार्थना करें कि आप
दर्शनों की उत्कट इच्छा है समय हो तो
पधार कर कृतार्थ करें और स्वास्थ्य कैसा है
यह भी बताएं इच्छा मेरी दुर्गति ही कहूंगा
क्यूंकि पिताजी डेढ़ वर्ष से रुग्ण चले आरहे हैं
भाई भोजराज भी पुन: अति दुर्बलता की तरफ जारहा
श्री मधुसूदन भट्ट जी का तो कहना ही क्या है
वह तो अब इतनी उद्दण्डता पर उतर आया है
कि अब अपनी स्त्री का कभी गला घोटने कभी
मारने का प्रयत्न करने लगता है जब दौरे का
प्रभाव होता है तो घर का वातावरण ही ऐसा लगता है

कि मानो बड़े ... हो ...
कर उठते हैं ~~...~~ हृदय पर दु:ख ... होता
कल एक और विलक्षण घटना ...
लड़का जिसके गत वर्ष आश्रम में यज्ञोप...
करवाया था मेरे पास ही संध्या करके ...
तृतीय अध्याय पढ़ रहा था मैं उठ कर दुकान पर
पहुंचा था कि पीछे से पता नहीं क्या कारण चूल्हे
माता जी के पास से कर रहा था उपनाना जी ने
भर के बुलाया चीलम रख के आया कि अचानक
दौरे की तरह एक आंख मुंह फड़कने लगा ...
हो गई एक बाहं टांग दाहिं तरफ की ...
हो गई ऐसा होते ही मुझे दुकान से बुलाया ...
तब तक कुछ ठीक था परंतु बांह सीधी लकड़ी सी
पक्षाघात वालों की तरह थी मैंने रुद्रसंजय की गो...
और कुछ और अच्छा हुआ बाद में होमियोपै...
दवा पक्षाघात को रोकने की दी जारही है श्री चरणों...
प्रार्थना कर रहा हूं कि क्या समझूं कैसा करूं कुछ ...
लिख कर भेज रहा हूं कुछ उपाय बताएं मेरे ...
मग्न के भासते हैं स्वयं तो देखे ही नहीं ...
होता तो इतना शीघ्र अंग स्वस्थ नहीं ...
... शक्ति ... अन्तर ... १७ के ... दो में है
आरम्भ हुआ है

... ८ चौ ... हुल नं... रविवदिके
... लग्नं ३ ... ८-१० पुष्कसवेंदी ६४
चान्तरमा त्मज हेमराज शर्मा जोजा

जन्म लग्नं   ... लग्नं



... केतु अन्तर ३० भादो से आरम्भ हुआ है



वर्षदशा इसमा २९ कार्तिक से चन्द्रमा की आरम्भ हुई है श्री ... रा जी वितेगी कृपया श्री चाप कुछ ... आदि बताए ताकि निश्चितता हो

... मैने श्री निरंजन लालको भी लिख तो दिया है परन्तु ... शिथिल है लाईन ही नहीं पकड़ सकता उल्टी लाईन ... चलेगा जब ... नुकसान उठाता है अब जरा उसके ... नहीं तो अब तक बचा है चक्कर लगाता रहा है
... एक विशेष चौक्स भेज रहा हूं इससे लाभ
... चाहे ... अधिकारी को बताए ... गुड़ वायदा अनाज
... १५ के ... सके ... में हैं ... की तेजी इसका

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER




~~श्री गोविन्दजी ...~~
चौबुर्जी,
श्री ~~श्री ...~~
c/o
वैद्य वृहस्पति देव शिखुआ ~~...~~
P.O. भरतपुर
भोगलरोड-पो-जंगपुरा ~~...~~
देहली नं० १४

5/12/60

← तीसरा मोड़ Third fold →

First fold पहला मोड़

भेजने वाले का नाम और पता :– Sender's name and address :–




इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

ए-७२-जनता कॉलोनी

जयपुर

दिनांक १५।२।६६

परम श्रध्देय ।

सा. सा. प्रणिपात ।

वहुत दिनों से कोई कुशल समाचार और न आशीर्वाद । अभी कल ही श्री भैया जी के पत्र से ज्ञात हुआ कि आपके पैर में किसी दुर्घटना के कारण चोट आगई है । यह समाचार जान कर हृदय को वहुत दुख हुआ । आशा ही नहीं विश्वास है अव पहिले की अपेक्षा स्वस्थ होंगे । मां से प्रार्थना है आप शीघ्रातिशीघ्र स्वस्थ हों ।

मैं स्वयं ही उपस्थित होने को था किंतु किसी कारण नहीं आ पाया । जैसे ही अवकाश मिला मैं आपकी सेवा में उपस्थित होने की चेष्टा मेंहूं । वहुत दिनों से आपके दर्शनों की प्रवल आकांक्षा रही है । किंतु कोई न कोई विघ्न हुआ है । अव विश्वास है जल्दी ही स्वास्थ्य लाभ कर आप इधर पधार कर अनुग्रहीत करेंगे ।

अपने स्वास्थ्य के संवंध में शीघ्र ही समाचार अवश्य दिलावे की कृपा करें ।

सादर -

विनीत

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER



परम पूज्य अनंत श्री श्री जी
महाराज
द्वारा- श्री कस्तूरीलाल जी आनंद
आनंद भवन- सी-३
C-3 - N.H.5 Faridabad Township
फरीदाबाद टाउनशिप
New Delhi

← तीसरा मोड़ Third fold →

भेजने वाले का नाम और पता :- Sender's name and address :-

15/2/65

S. D. Sharma
A-72-
Janta Colony,
Jaipur

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिये NO ENCLOSURES ALLOWED

ॐ

卐 卐

दूरभाष : 5525152

जनकपुरी धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ



मुख्यालय : श्री सनातन धर्म मन्दिर, सी–3 बस स्टाप जनकपुरी, नई दिल्ली–110 058

JANAK PURI DHARMIK AND SAMAJIK MAHA SANGH

Head Office : Shri Sanatan Dharam Mandir, C-3, Bus Stop, Janak Puri, New Delhi-110058

Ref. No. .... Dated 6.3.2001

शोक संदेश

श्री रतन लाल अग्रवाल जी के आकस्मिक एवं असामयिक निधन से जनकपुरी धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ के विभिन्न घटकों को भारी आघात पहुंचा है। श्री अग्रवाल जी एक धर्म निष्ठ एवं कर्मनिष्ठ व्यक्ति थे जो समाज को धार्मिक तथा सामाजिक कार्यों में सदैव सहयोग देते थे तथा परिवार को इन कार्यों की ओर सचेष्ट रहने के लिए संस्कारित भी करते थे। महासंघ की प्रबन्ध समिति शोक की इस घड़ी में श्री अग्रवाल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करती है।

जनकपुरी धार्मिक एवं सामाजिक महासंघ की प्रबंध समिति प्रभु से प्रार्थना करती है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

हम हैं आपके साथ

[signature]

जनकपुरी महासंघ परिवार
(जे० पी० आर्य)
महामंत्री

श्री गिरधर गोपाल अग्रवाल
B-42 [illegible]
नई दिल्ली